ISSN 2278-8808 SJIF 2015: 5.403
An International Peer Reviewed & Referred
SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL
FOR INTERDISCIPLINARY STUDIES

माध्यमिक स्तर पर भाषा अध्यापन में संगीत, नृत्य, नाटय और कला की उपयोगिता

प्रा. डॉ. रविराज फुरडे *(Page 105-107)*
शिक्षा महाविद्यालय, बार्शी जि. सोलापूर

SRJIS IMPACT FACTOR SJIF 2015: 5.401
Date of Issue Release: 04/03/2017,
Volume: SRJIS, Jan-Feb, 2017, 4/30

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

प्रास्ताविक

शिक्षा जीवन से जुडी हो इस बात को लेकर शिक्षाशास्त्री प्रयत्नरत हैं। जीवन की दौडधूप को कम करने के लिए जीवन में शांति की निहायत जरूरत होती है। आजकल शांति के बजाय अशांति का माहौल बना हुआ है। चारों ओर कोलाहल सा मचा हुआ है। जीवन में पैसे की अहमियत आए दिन बढती जा रही है। बच्चों से लेकर बूढों तक सब व्यस्त दिखाई दे रहे हैं। शिक्षा द्वारा मनुष्य के जीवन में समाधान ढूंढने का भरकस प्रयास चल रहा है। यूजीसी और एनसीटीई दोनों संस्थाओं ने बी.एड. पाठयक्रम को दो साल का बनाने के निर्देश दे दिए और समूचे भारत में उसकी कारवाई की गई। उसके कुछ ही दिनों बाद दो साल के कोर्स पर काफी चर्चा शुरू हो गई कि, छात्रों के लिए दो साल का बी.एड. मुश्किल लग रहा है। परंतु सही मायने में देखा जाए तो दो साल के पाठयक्रम में हर कार्य सफलतापूर्वक किया जा सकता है।

कई वर्षों से शिक्षा के क्षेत्र में बदलाव की जरूरत महसूस हो रही थी। शिक्षक का प्रशिक्षण उचित ढंग से होने पर ही अच्छे समाज का निर्माण संभव है। अत: शिक्षक निपुण हो इस बात को लेकर कोई संदेह नहीं है। इसी कोर्स में संगीत एवं विभिन्न कलाओं की शिक्षा सिलसिलेवार देने की व्यवस्था की गई है। छात्रों में कला के प्रति उत्सुकता एवं रूचि हो यह बात सकारात्मक लगती है।

माध्यमिक स्तर पर भाषा अध्यापन

माध्यमिक स्तर पर भाषा अध्यापन में त्रिभाषा सूत्र का प्रयोग किया जाता है। इसमें मातृभाषा, राष्ट्रभाषा एवं अंतर्राष्ट्रीय भाषा का प्रयोग किया जाता है। कोई भी भाषा पढानी हो तो उसमें विभिन्न भावभावनाओं का मिलाप होता है। भाषा में साहित्य की शिक्षा दी जाती है। साहित्य में गद्य तथा पद्य के अलावा नाटक, कहानी, जीवनी, एकांकी तथा यात्रवर्णन ऐसे पाठ होते हैं।

साथ ही साथ देश की विभिन्नताओं पर आधारित पाठ होते हैं। माध्यमिक स्तर के छात्रों में गीत संगीत के प्रति उत्साह निर्माण करने में इस विषय की उपयोगिता स्पष्ट हो जाती है।

भाषा अध्यापन में विभिन्न कलाओं की भूमिका:

भाषा और संगीत:

भाषा में कविता को सुमधुर गीत के रूप में प्रस्तुत करने से बच्चे बडे चाव से कविता का पाठ सीखते हैं। उनमें देशभक्ति गीतों द्वारा देशप्रेम की भावना उजागर की जा सकती है। संगीत वास्तव में मनुष्य के जीवन से प्रारंभ होकर आजीवन जीवन में बना रहता है। हमारे संस्कारों में संगीत बसा हुआ है। भाषा और संगीत का तो चोली दामन का रिश्ता है। संगीत के बिना जीवन सूना बन जाएगा अत: संगीत की शिक्षा बेहद जरूरी है।

भाषा और नृत्य:

भारतीय परंपराओं में नृत्य को अनन्यसाधारण महत्व है। विभिन्न त्योहारों में बच्चों से लेकर बूढे तक नृत्य: करते है। जीवन के तनाव को कम करने का यह एक असरदार तरिका है। नृत्य अपने आप में एक साधना है। व्यक्तिगत तथा सामूहिक रूप में नृत्य किए जाते हैं। नृत्य द्वारा अपना स्वास्थ्य भी अच्छा रहता है। भारतीय एवं पाश्चात्य परंपरा के नृत्य सिखाए जाते हैं। मनोरंजन के साथ साथ कला अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम भी है।

भाषा और नाटय:

भरतमुनी को भारतीय नाटयकला के विकास का सर्व श्रेय दिया जाता है। उन्होंने नाटयशास्त्र ग्रंथ की रचना की। नाटक द्वारा अभिनय में विभिन्न रसों को स्थान दे दिया। नाटक यह एक साहित्यिक विधा तो है ही साथ ही वह एक सामूहिक आविष्कार भी है। नाटक को पंचम वेद भी कहा जाता है। नाटक एक रोचक कला है। क्यों कि इसमें प्रस्तुतिकरण को महत्व दिया जाता है। नाटक द्वारा अभिनय कला की शिक्षा दी जाती है। साथ ही मनोरंजन भी किया जाता है। कई विषयों को संक्षेप में अभिव्यक्त किया जाता है। अत: भाषा में नाटक का स्थान सर्वोपरि है।

भाषा और कला:

भाषा की शिक्षा में कला का महत्वपूर्ण स्थान होतो है। कला का नाम लेते ही भारतीय परंपराओं में कुल चौंसट कलाओं की बात की जाती है। लेकिन उनमें से प्रमुख पांच कलाओं को महत्वपूर्ण माना जाता है, संगीत नृत्य चित्र शिल्प एवं अभिनय आदि। छात्रों में विभिन्न कलाओ में रूचि उत्पन्न करने में इस विषय की भूमिका महत्वपूर्ण है। अभिव्यक्ति कौशल मे विभिन्न कलाओं का स्थान अनन्यसाधारण है। चित्रकला के द्वारा भाषा अध्यापन में सहजता लाई जा सकती है। कहा जाता है, एक चित्र एक हजार शब्दों का कार्य करता है।

उपसंहार:

माध्यमिक स्तर पर छात्रों की भावाभिव्यक्ति का विकास करने में कला का योगदान अनन्यसाधारण माना जाता है। छात्रों सजगता हो उत्साह हो आगे बढने की ललक पैदा करने में इस विषय का स्थान महत्वपूर्ण है। संगीत, नृत्य ,नाटय और कला की शिक्षा उसे जीवन में नई दीक्षा देती है। कला के प्रति सकारात्मक विचार हो तो शिक्षक भी कई नए नए प्रयोग कर छात्रों का अधिकाधिक सक्रिय बना सकते हैं। छात्रों में उत्साह भरने का कार्य कलाद्वारा सहज संभव है।

संदर्भ:

सक्सेना, रामस्वरूप (१९७८) भारतीय नाटयपरंपरा का इतिहास, आगरा, प्रभात प्रकाशन।
द्विवेदी, सत्यप्रकाश (१९६८) भारतीय संदर्भ में कला की शिक्षा, लुधियाना, नवकेतन प्रकाशन।
मिश्र, रामलाल (२०००) साहित्य और संगीत, लखनऊ, लाल बुक डिपो।
भंगाळे डॉ. शैलजा (२०१६) शिक्षणातील नाटय आणि कला, जलगांव, प्रशांत पब्लिकेशन।